हिंदी साहित्य का इतिहास

Scanned by CamScanner

हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रारंभिक लेखक

गार्सा द ताँसी तथा शिवसिंह सेंगर ने काल-विभाजन की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

Scanned by CamScanner

सर्वप्रथम काल-विभाजन :जॉर्ज ग्रियर्सन ने किया

- चारण काल (७००-१३००)
- पन्द्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण
- जायसी की प्रेम कविता
- ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय
- मुगल दरबार
- तुलसीदास
- रीतिकाल
- तुलसीदास के अन्य परवर्ती
- अट्ठराहवीं शताब्दी
- कम्पनी शासन में हिन्दुस्तान
- विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान

Scanned by CamScanner

मिश्र-बंधुविनोद में मिश्रबंधुओं ने काल-विभाजन किया।

- आरम्भिक काल — क) पूर्वारम्भिक काल **(700-1348)**
  ख) उत्तरारम्भिक काल **(1344 -1444)**
- माध्यमिक काल - क) पूर्व माध्यमिक काल **(1445 -1560)**
  ख) प्रोढ माध्यमिक काल **(1561 -1680)**
- अलंकृत काल - क) पूर्वालंकृत काल **(1681 -1790)**
  ख) उत्तरालंकृत काल **(1561 -1680)**
- परिवर्तन काल - **(1990 -9925)**
- वर्तमान काल - **(1926 -** आज तक)

Scanned by CamScanner

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपेक्षाकृत प्रमाणित कार्य किया।

- आदिकाल (वीरगाथा काल सं **1050-1375**)
- पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल सं **1375-1700**)
- उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल सं **1700-1900**)
- आधुनिक काल (गद्यकाल सं **1900-** अबतक)

Scanned by CamScanner

भक्तिकाल

(विक्रम सं १३७५-१६०० - सन १३१३-१६४३)

भक्तिकालीन साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ।

निर्गुण और सगुण धाराओं में परस्पर भिन्न मत विश्वास विचार और मान्यतायें थी किन्तु कुछ प्रवृतियाँ समान रुप से पायी जाती है।

Scanned by CamScanner

गुरु महिमा।
भक्ति की प्रधानता।
अंहकार का त्याग।
नाम की महिमा ।
बहुजन हिताय ।
लोकभाषाओं की प्रधानता ।
समन्वयात्मकता।
वीर काव्यों की रचना।
प्रबंधात्मक चरित्र काव्य।
नीति काव्य ।
गद्यात्मक साहित्य ।
रीति काव्यों की रचना।

Scanned by CamScanner

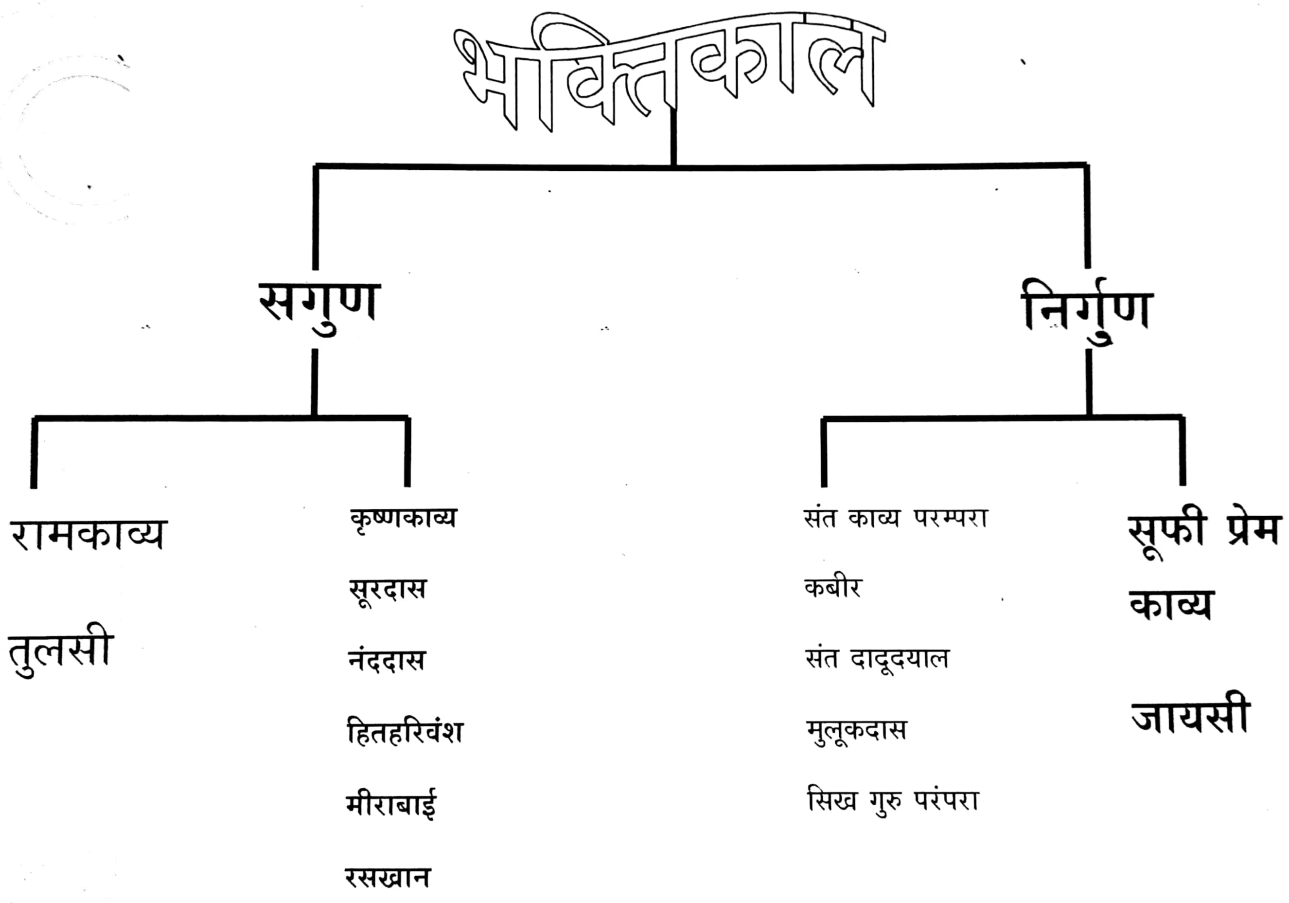

Scanned by CamScanner

संत काव्य की सामान्य विशेषताएँ

- निर्गुण ईश्वर में विश्वास
- बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध
- सद्‌गुरु का महत्व
- जाति-पाँति के भेद-भाव का विरोध
- रुढियों और आडम्बरों का विरोध
- रहस्यवाद
- भजन तथा नाम-स्मरण
- श्रृंगार वर्णन एवं विरह की मार्मिक उक्तियाँ
- लोक-संग्रह की भावना
- नारी के प्रति दृष्टिकोण
- माया से सावधान
- भाषा एवं शैली

Scanned by CamScanner

सूफी मत के सिध्दांत

- ईश्वर
- ईश्वर और जगत का संबंध
- सृष्टि की उत्पति
- सृष्टि में मानव सर्वोपरि
- पूर्ण मानव की मान्यता
- साधन सोपान
- हाल की चार अवस्थाएं
- शैतान
- पीर की महत्ता
- कतिपय अन्य क्रियाएं
- प्रेम

Scanned by CamScanner

सूफी प्रेम काव्यों की सामान्य प्रवृत्तियाँ

- प्रबन्ध कल्पना
- चरित्र-चित्रण
- भाव-व्यंजना
- लोक-पक्ष एवं हिन्दु संस्कृति
- शैतान
- मंडनात्मकता
- प्रेम कहानियों की मूल प्रेरणा
- रस
- प्रतीक विधान
- विविध प्रभाव
- काव्य प्रकार
- भाषा, छन्द, अलंकार

Scanned by CamScanner

सगुण भक्ति काव्य की मान्याताएँ

- ईश्वर का सगुण रुप
- अवतार भावना
- लीला रहस्य
- रुपोपासना
- शंकर के अव्दैतवाद का विरोध
- विविध-स्त्रोत
- भक्ति क्षेत्र में जाति-भेद की अमान्यता
- गुरु की महत्ता
- भक्ति

Scanned by CamScanner

राम भक्ति साहित्य की प्रवृत्तियाँ

- राम का स्वरुप
- समन्वयात्मकता
- लोक संग्रह की भावना
- भक्ति का स्वरुप
- रस
- पात्र तथा चरित्र-चित्रण
- राम भक्ति में मधुर रस का समावेश
- काव्य शैली
- छन्द
- अलंकार
- भाषा

Scanned by CamScanner

कृष्ण भक्ति साहित्य के नाना संप्रदाय

विष्णु संप्रदाय	प्रवर्तक	विष्णु स्वामी
निम्बार्क संप्रदाय	प्रवर्तक	निम्बार्काचार्य निम्बादित्य
माध्व संप्रदाय	प्रवर्तक	माध्वाचार्य
श्री संप्रदाय	प्रवर्तक	रामानुजाचार्य
रामानन्दी संप्रदाय	प्रवर्तक	रामानन्द
वल्लभ संप्रदाय	प्रवर्तक	वल्लभाचार्य
चैतन्य संप्रदाय	प्रवर्तक	चैतन्य महाप्रभु
राधावल्लभ संप्रदाय	प्रवर्तक	हितहरिवंश
सखी संप्रदाय	प्रवर्तक	स्वामी हरिदास

Scanned by CamScanner

कृष्ण भक्ति काव्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि

- ब्रम्ह
- कृष्ण भक्ति का आधार प्रेम
- माधुर्य भाव का स्वरुप
- प्रेम-भक्ति में साधना –निरपेक्षता
- सत्संग तथा गुरु-महिमा
- निवृत्ति और प्रवृत्ति का समन्वय

Scanned by CamScanner

कृष्ण-भक्ति काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ

- कृष्ण लीला वर्णन
- विषयवस्तु में मौलिक उद्‌भावना
- रस-चित्रण
- भक्ति-भावना
- पात्र एवं चरित्र-चित्रण
- प्रकृति-चित्रण
- रीति तत्व का समावेश
- प्रेम की अलौकिकता
- सामाजिक पक्ष
- ऐतिहासिक पक्ष
- काव्य रुप
- शैली
- छन्द
- भाषा
- संगीतात्मकता

Scanned by CamScanner

छायावाद

छायावाद उद्‌गम के कारण

१. व्दिवेदी युगीन:- नीरस, इतिवृत्तात्मक कविता के प्रति प्रतिक्रिया और विद्रोह।

२. रवीन्द्र की गीतांजलि और समकालीन बंगला साहित्य का प्रभाव।

३. अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों के काव्य का अध्ययन।

४. व्यक्तिवाद का अभ्युदय।

५. पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति का संर्पक

Scanned by CamScanner

छायावाद की परिभाषा

जयशंकर प्रसादः-

जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिंदी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया।

महादेवी वर्माः-

छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिए जो प्राचीन काल से बिंब-प्रतिबिंब के रुप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुःख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित जान पडती थी.... परंतु इस संबंध से मानव हृदय की सारी प्यास बुझ न सकी क्योंकि मानवीय संबंधों में जब तक अनुराग जनित आत्मविसर्जन का भाव नहीं घुल जाता तब तक वे सरस नहीं हो पाते और जब तक यह मधुरता सीमातीत नहीं हो जाती तब तक हृदय का अभाव दूर नहीं होता। इसी से (प्रकृति की) इस अनेकरुपता के कारण एक मधुरतम व्यक्तित्व का आरोप कर उसके निकट आत्मनिवेदन करना इस काव्य (छायावाद) का दूसरा सोपान बना जिसे सहस्यमय रुप के कारण ही रहस्यवाद नाम दिया गया।

Scanned by CamScanner

छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

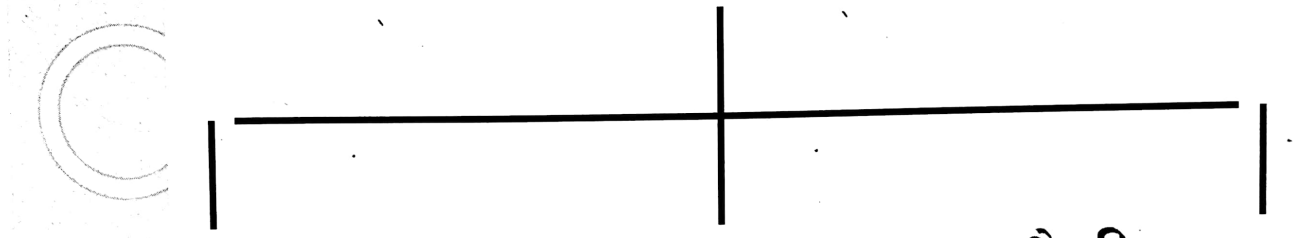

भावगत

१ नारी सौंदर्य

२ प्रकृति सौंदर्य

विचारगत

१ सर्वात्मवाद

२ समन्वयवाद

३ व्यापक मानवतावाद

४ दुखवाद

शैलीगत

१ मुक्तक गीति शैली

२ प्रतीकात्मकता

३ प्राचीन और नवीन अलंकारों का नूतन प्रयोग

Scanned by CamScanner

छायावाद की विशेषताएँ

१ प्रेमानुभूति की सहज अभिव्यक्ति

२ कल्पना की अतिशयता

३ सौंन्दर्य के प्रति अत्याधिक आकर्षण

४ रुढियों से विद्रोह

५ स्थूल से सूक्ष्म की और प्रगति

६ प्रकृति प्रेम

७ प्रकृति से तादाम्य

८ राष्ट्रीयता की भावना

९ व्यापक मानवतावाद

१० समन्वयवादी दृष्टिकोण

११ सर्वात्मवाद

Scanned by CamScanner